سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ

सूरह फ़ील मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ط ①

क्या तुमने नहीं देखा? तुम्हारे पालनहार (रब) ने हाथी वालों के साथ क्या किया !

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ لا ②

क्या उसने उनकी चाल (कपट योजना) को विफल नहीं कर दिया?

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ لا ③

और उन पर समूह (झुंड के झुंड) पक्षी भेजे

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ لا ص ④

(जो उन पर) पकी मिट्टी से (बने) कंकड़ीयां (पत्थर) मारते (बरसाते) थे।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ع ⑤

तो उन्हें ऐसा बना दिया जैसे चूर्णित (खाया हुआ) भूसा।